

विचार बिन्दु

ठोकरें केवल धूल ही उड़ाती हैं, फसलें नहीं उगाती। –टैगोर

फिल्म नीति पर्यटन के नहीं, कला-संस्कृति के केंद्र में हो!

ओटीटी प्लेटफॉर्म, मल्टीप्लेक्स संस्कृति तथा स्मार्टफोन जैसे मनोरंजन के नये माध्यमों के आ जाने से पारंपरिक सिनेमाघरों में दर्शकों की आमद कम हो गई है। राजस्थानी भाषा की फिल्मों को तो पहले भी सिनेमाघर मिलना दूभर रहा है जिस कारण उनके निर्माताओं की यह शिकायत हमेशा बनी रही कि उनकी फिल्में दर्शकों तक पहुंचाने ही नहीं पाती क्योंकि उन्हें मुख्य धारा की हिन्दी फिल्मों के मुकाबले महंगे सिनेमाघरों की स्क्रीन नहीं मिल पाती। उनकी लंबे समय से मांग रही है कि राज्य सरकार राजस्थानी फिल्मों के निर्माण और प्रदर्शन को बढ़ावा देने के लिए कुछ ठोस कदम उठाये। मगर शासन और राजनेताओं की प्राथमिकताओं में सिनेमा हाशिये पर भी नहीं रहता है। राजस्थानी सिनेमा को बढ़ावा देने का भरोसा देने की रस्म अदायगी तो खूब हुई है जिसके चलते पिछले दशकों में राज्य सरकारों ने अनेक बार फिल्म नीतियां बनाई हैं, किन्तु राजस्थानी सिनेमा को अपनी हैसियत बनाने में उन नीतियों से कभी रती भर भी मदद नहीं मिली है। अब एक बार फिर उप-मुख्यमंत्री दीप्ता कुमारी ने राज्य की नई फिल्म नीति लाने की घोषणा की है जिसे लेकर राजस्थानी भाषा की फिल्मों के निर्माण और व्यवसाय से जुड़े लोगों में हलचल बढ़ गई है। राजस्थान की पहचान उसकी अपनी गहरी सांस्कृतिक विरासत और असाधारण भौगोलिक विविधता के कारण रही है। जयपुर, जोधपुर और बूंदी के स्मारक, उदयपुर की झीलें, जैसलमेर का स्वर्णम रेगिस्तान, स्थानीय लोगों के परिधान और लोक संगीत दुनिया भर के पर्यटकों को हमेशा ही आकर्षित करते रहे हैं। उन्हें अपने प्रचार के लिए फिल्मों के कोई दरकार नहीं रही है। किन्तु राज्य सरकारें जब भी फिल्म नीति बनाती हैं तो उसे पर्यटन के प्रोत्साहन के औजार के रूप में ही हमेशा प्रस्तुत करती रही है। इस बार भी उप-मुख्यमंत्री के बयान से ऐसा ही प्रतीत होता है। राजस्थान में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए फिल्मों के उपयोग को फिल्म नीति कहना केवल सीमित सोच का परिचय देना ही नहीं है, बल्कि वह फिल्म उद्योग के बारे में मूल समझ के अभाव को भी दर्शाता है। सता में बैठे लोगों को कौन समझाये कि फिल्मनीति सिर्फ लोकेशन-प्रमोशन का माध्यम नहीं होती है; वह एक विचार, एक सृजन और एक संस्कृति का विस्तार होती है। राज्य की फिल्म नीति के साथ हमेशा ही यह समस्या रही है कि वह हमेशा दूरिज्म का विस्तार मानकर तैयार की जाती रही है और इस बार भी इससे अलग होने के आसार नजर नहीं आ रहे हैं। राज्य की फिल्म नीति को कला, संस्कृति, और रचनात्मकता के उद्यम का हिस्सा होना चाहिए। आवश्यकता इस बात की है कि फिल्म नीति में राजस्थान को सिनेमा-उद्योग के केंद्र के रूप में स्थापित करने का खाका तैयार किया जाए, न कि उसे पर्यटन का परिशिष्ट बनाकर छोड़ दिया जाए। फिल्मकारों के लिए अनुकूल वातावरण, स्थानीय प्रतिभाओं के लिए अवसर, रोजगार एवं आर्थिक विविधियों का विस्तार, और संस्कृति एवं कला के संरक्षण और संवर्धन का ढांचा बनाना फिल्म नीति का वास्तविक उद्देश्य होना चाहिए। लेकिन वर्तमान समय में रास्थान की फिल्म नीति का बड़ा हिस्सा लोकेशन शूटिंग के परमिशन, शुल्क और पर्यटन संबंधी पैकेजों पर केंद्रित रहता है। इसका सबसे बड़ा नुकसान यह होता है कि सरकार फिल्म उद्योग को एक व्यवसाय या क्रिएटिव सेक्टर के रूप में विकसित करने से पूरी तरह चूक जाती है। संचिवालय में बैठे अधिकारियों की सोख पर चलने वाले नीति निर्माताओं ने फिल्मों को सिर्फ पर्यटन बढ़ाने का साधन मान लिया है। पर्यटन को फिल्म नीति का परिणाम तो बनाया जा सकता है, लक्ष्य नहीं। फिल्म नीति में यह विभाजन स्पष्ट करना होगा। फिल्म उद्योग में कला, कौशल, रोजगार, रचनात्मकता शामिल होती है। सिने-पर्यटन उसका सह-उत्पाद हो सकता है।

राजस्थान में फिल्मों की शूटिंग तो खूब हुई, पर स्थानीय फिल्म निर्माण, स्थानीय कलाकारों का विकास, तकनीकी प्रशिक्षण आदि के पहलुओं में प्रगति नहीं हो पाई। इसलिए पर्यटन-केंद्रित सोच से हटकर ‘रचनात्मक उद्योग’ की दृष्टि से नीति बनाने की पहल करने की जरूरत है। नई फिल्म नीति को पर्यटन विभाग की फाइलों से निकाल कर कला और संस्कृति के तहत लाने की आवश्यकता है क्योंकि फिल्म में कला का विस्तार है, लोकेशन-गाइड नहीं। लंबे समय से राजस्थान में फिल्म सिटी बनाने की बातें भी होती रही हैं। किन्तु अब यह भी बेमानी हो चुका है। डिजिटल तकनीक के विकास से अब फिल्म सिटी का कॉन्सेप्ट ही समाप्त हो चला है। राजस्थान की शूटिंग लोकेशन भी अब वीएफएक्स के ज़माने में अर्थहीन हो गई है। वास्तव में फिल्म सिटी के नाम पर फिल्म करोीबार से इतर के निजी निवेशक लालायित रहते हैं, जिनकी दिलचस्पी सिनेमा के बजाय रियल एस्टेट अर्थात रियायती दरों पर भूमि पाने और कर रियायतों में ही होती है जिसमें उन्हें सीधा मुनाफा दिखता है। इससे वास्तविक फिल्मकारों की मदद नहीं होती।

राजस्थानी भाषा का साहित्य और यहां की लोक-कथाओं का समृद्ध भंडार किसी भी राज्य से कम नहीं है। बस जरूरतइस बात की है कि राजस्थानी फिल्में बनाने वालों को उस तरफ प्रेरित किया जाए तथा शॉर्ट फिल्म, डॉक्यूमेंट्री और इंडिपेंडेंट सिनेमा के लिए स्पेस

हो गई है। वास्तव में फिल्म सिटी के नाम पर फिल्म करोीबार से इतर के निजी निवेशक लालायित रहते हैं, जिनकी दिलचस्पी सिनेमा के बजाय रियल एस्टेट अर्थात रियायती दरों पर भूमि पाने और कर रियायतों में ही होती है जिसमें उन्हें सीधा मुनाफा दिखता है। इससे वास्तविक फिल्मकारों की मदद नहीं होती।

राजस्थानी भाषा का साहित्य और यहां की लोक-कथाओं का समृद्ध भंडार किसी भी राज्य से कम नहीं है। बस जरूरतइस बात की है कि राजस्थानी फिल्में बनाने वालों को उस तरफ प्रेरित किया जाए तथा शॉर्ट फिल्म, डॉक्यूमेंट्री और इंडिपेंडेंट सिनेमा के लिए स्पेस हो गई है। वास्तव में फिल्म सिटी के नाम पर फिल्म करोीबार से इतर के निजी निवेशक लालायित रहते हैं, जिनकी दिलचस्पी सिनेमा के बजाय रियल एस्टेट अर्थात रियायती दरों पर भूमि पाने और कर रियायतों में ही होती है जिसमें उन्हें सीधा मुनाफा दिखता है। इससे वास्तविक फिल्मकारों की मदद नहीं होती।

राजस्थानी भाषा का साहित्य और यहां की लोक-कथाओं का समृद्ध भंडार किसी भी राज्य से कम नहीं है। बस जरूरतइस बात की है कि राजस्थानी फिल्में बनाने वालों को उस तरफ प्रेरित किया जाए तथा शॉर्ट फिल्म, डॉक्यूमेंट्री और इंडिपेंडेंट सिनेमा के लिए स्पेस हो गई है। वास्तव में फिल्म सिटी के नाम पर फिल्म करोीबार से इतर के निजी निवेशक लालायित रहते हैं, जिनकी दिलचस्पी सिनेमा के बजाय रियल एस्टेट अर्थात रियायती दरों पर भूमि पाने और कर रियायतों में ही होती है जिसमें उन्हें सीधा मुनाफा दिखता है। इससे वास्तविक फिल्मकारों की मदद नहीं होती।

राजस्थानी भाषा का साहित्य और यहां की लोक-कथाओं का समृद्ध भंडार किसी भी राज्य से कम नहीं है। बस जरूरतइस बात की है कि राजस्थानी फिल्में बनाने वालों को उस तरफ प्रेरित किया जाए तथा शॉर्ट फिल्म, डॉक्यूमेंट्री और इंडिपेंडेंट सिनेमा के लिए स्पेस हो गई है। वास्तव में फिल्म सिटी के नाम पर फिल्म करोीबार से इतर के निजी निवेशक लालायित रहते हैं, जिनकी दिलचस्पी सिनेमा के बजाय रियल एस्टेट अर्थात रियायती दरों पर भूमि पाने और कर रियायतों में ही होती है जिसमें उन्हें सीधा मुनाफा दिखता है। इससे वास्तविक फिल्मकारों की मदद नहीं होती।

राजस्थानी भाषा का साहित्य और यहां की लोक-कथाओं का समृद्ध भंडार किसी भी राज्य से कम नहीं है। बस जरूरतइस बात की है कि राजस्थानी फिल्में बनाने वालों को उस तरफ प्रेरित किया जाए तथा शॉर्ट फिल्म, डॉक्यूमेंट्री और इंडिपेंडेंट सिनेमा के लिए स्पेस हो गई है। वास्तव में फिल्म सिटी के नाम पर फिल्म करोीबार से इतर के निजी निवेशक लालायित रहते हैं, जिनकी दिलचस्पी सिनेमा के बजाय रियल एस्टेट अर्थात रियायती दरों पर भूमि पाने और कर रियायतों में ही होती है जिसमें उन्हें सीधा मुनाफा दिखता है। इससे वास्तविक फिल्मकारों की मदद नहीं होती।

राजस्थानी भाषा का साहित्य और यहां की लोक-कथाओं का समृद्ध भंडार किसी भी राज्य से कम नहीं है। बस जरूरतइस बात की है कि राजस्थानी फिल्में बनाने वालों को उस तरफ प्रेरित किया जाए तथा शॉर्ट फिल्म, डॉक्यूमेंट्री और इंडिपेंडेंट सिनेमा के लिए स्पेस हो गई है। वास्तव में फिल्म सिटी के नाम पर फिल्म करोीबार से इतर के निजी निवेशक लालायित रहते हैं, जिनकी दिलचस्पी सिनेमा के बजाय रियल एस्टेट अर्थात रियायती दरों पर भूमि पाने और कर रियायतों में ही होती है जिसमें उन्हें सीधा मुनाफा दिखता है। इससे वास्तविक फिल्मकारों की मदद नहीं होती।

राजस्थानी भाषा का साहित्य और यहां की लोक-कथाओं का समृद्ध भंडार किसी भी राज्य से कम नहीं है। बस जरूरतइस बात की है कि राजस्थानी फिल्में बनाने वालों को उस तरफ प्रेरित किया जाए तथा शॉर्ट फिल्म, डॉक्यूमेंट्री और इंडिपेंडेंट सिनेमा के लिए स्पेस हो गई है। वास्तव में फिल्म सिटी के नाम पर फिल्म करोीबार से इतर के निजी निवेशक लालायित रहते हैं, जिनकी दिलचस्पी सिनेमा के बजाय रियल एस्टेट अर्थात रियायती दरों पर भूमि पाने और कर रियायतों में ही होती है जिसमें उन्हें सीधा मुनाफा दिखता है। इससे वास्तविक फिल्मकारों की मदद नहीं होती।

राजस्थानी भाषा का साहित्य और यहां की लोक-कथाओं का समृद्ध भंडार किसी भी राज्य से कम नहीं है। बस जरूरतइस बात की है कि राजस्थानी फिल्में बनाने वालों को उस तरफ प्रेरित किया जाए तथा शॉर्ट फिल्म, डॉक्यूमेंट्री और इंडिपेंडेंट सिनेमा के लिए स्पेस हो गई है। वास्तव में फिल्म सिटी के नाम पर फिल्म करोीबार से इतर के निजी निवेशक लालायित रहते हैं, जिनकी दिलचस्पी सिनेमा के बजाय रियल एस्टेट अर्थात रियायती दरों पर भूमि पाने और कर रियायतों में ही होती है जिसमें उन्हें सीधा मुनाफा दिखता है। इससे वास्तविक फिल्मकारों की मदद नहीं होती।

राजस्थानी भाषा का साहित्य और यहां की लोक-कथाओं का समृद्ध भंडार किसी भी राज्य से कम नहीं है। बस जरूरतइस बात की है कि राजस्थानी फिल्में बनाने वालों को उस तरफ प्रेरित किया जाए तथा शॉर्ट फिल्म, डॉक्यूमेंट्री और इंडिपेंडेंट सिनेमा के लिए स्पेस हो गई है। वास्तव में फिल्म सिटी के नाम पर फिल्म करोीबार से इतर के निजी निवेशक लालायित रहते हैं, जिनकी दिलचस्पी सिनेमा के बजाय रियल एस्टेट अर्थात रियायती दरों पर भूमि पाने और कर रियायतों में ही होती है जिसमें उन्हें सीधा मुनाफा दिखता है। इससे वास्तविक फिल्मकारों की मदद नहीं होती।

राजस्थानी भाषा का साहित्य और यहां की लोक-कथाओं का समृद्ध भंडार किसी भी राज्य से कम नहीं है। बस जरूरतइस बात की है कि राजस्थानी फिल्में बनाने वालों को उस तरफ प्रेरित किया जाए तथा शॉर्ट फिल्म, डॉक्यूमेंट्री और इंडिपेंडेंट सिनेमा के लिए स्पेस हो गई है। वास्तव में फिल्म सिटी के नाम पर फिल्म करोीबार से इतर के निजी निवेशक लालायित रहते हैं, जिनकी दिलचस्पी सिनेमा के बजाय रियल एस्टेट अर्थात रियायती दरों पर भूमि पाने और कर रियायतों में ही होती है जिसमें उन्हें सीधा मुनाफा दिखता है। इससे वास्तविक फिल्मकारों की मदद नहीं होती।



मनोज कुमार

देश के संविधान की रोशनी में न्यायप्रिय शासन व्यवस्था की चाहत रखने वाले हरेक भारतीय के लिए और विशेष रूप से अधिवक्ताओं के लिए दो दिसम्बर अपने संवैधानिक दायित्व एवं अधिकारों पर मनन करने का दिवस है। देश के प्रथम राष्ट्रपति और प्रख्यात एडवोकेट डॉ. राजेंद्र प्रसाद के जन्मदिवस के मौके पर देशभर में अधिवक्ता दिवस मनाया जाता है। 3 दिसंबर 1884 को जन्में डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने चंपारण सत्याग्रह, नमक

सत्याग्रह, भारत छोड़ो आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई और कई बार जेल गए। बहुत कम लोगों को मालूम है कि लाल बहादुर शास्त्री के ‘जय जवान-जय किसान’ के नारे से एवं डॉ. एम.एस. स्वामीनाथन की हरित क्रांति से बहुत पहले डॉ. राजेंद्र प्रसाद देश की अंतरिम सरकार में खाद्य एवं कृषि मंत्री रहते हुए ‘अधिक अन्न उगाओ’ का नारा दे चुके थे।

कई बार यह सवाल पूछा जाता है कि इस देश में अधिवक्ताओं का इतना सम्मान क्यों है? इसका बड़ा ही सरल सा जवाब है कि भारत की स्वतंत्रता में अधिवक्ताओं का विशेष योगदान रहा है। जितने भी प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी हुए, उनमें से अधिकांश अधिवक्ता ही थे। ये वही अधिवक्ता थे, जिन्होंने असंख्य स्वतंत्रता सेनानियों की निरुशुल्क पैरवी कर उन्हें तत्कालीन अंग्रेज सरकार के क्रूर फांसी के फंदे से भी बचाया।

अब क्योंकि अंग्रेज सरकार का शासन तो समाप्त हो गया है, लेकिन फिर भी शोषण की प्रवृत्ति अभी भी अवचेतन मन में बची हुई है। इसी कड़ी

- आजादी के आंदोलन में अधिवक्ताओं का महत्वपूर्ण स्थान, अनेक स्वतंत्रता सेनानियों को फांसी के फंदे से बचाया
- वर्तमान में उपभोक्ता संरक्षण क़ानून से पीड़ित उपभोक्ताओं को त्वरित न्याय दिला रहे हैं

में उपभोक्ताओं के साथ अनुचित व्यापार-कार्य व्यवहार के फंदे से बचाने में अधिवक्तागण आज भी अपना अहम योगदान दे रहे हैं। यही वजह है कि देश-प्रदेश में उपभोक्ता जागरूकता लगातार बढ़ रही है। अकेले झुंझुनू जिले में गत 2 वर्ष में द्वाइ हजार से अधिक प्रकरणों का निस्तारण किया गया है। उपभोक्ताओं को त्वरित न्याय उपलब्ध करवाना तभी सम्भव हो पाया है, जब अधिवक्ताओं ने सकारात्मक रूप से उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम की खूबसूरती को धरातल पर लागू करने में आगे बढ़ कर सहयोग किया है। दरअसल उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम अपने आप में ऐसा संपूर्ण अधिनियम है जिसके दायरे में हर वो व्यक्ति शामिल है, जिसने वस्तु या सेवा

क्रय पर रसीद ली है। इस कानूनी अधिकार के असली नायक/सेनापति का दायित्व अधिवक्ता ही निभाते हैं,तभी उपभोक्ताओं की न्याय मिल पाना सम्भव हुआ है। साथ ही अधिवक्तागण समय-समय पर उपभोक्ता हितों की पैरवी कर सही मायने में मजबूत लोकतंत्र का अहसास भी करवाते हैं। वर्तमान समय की कसौटी में मजबूती, पीड़ित-शोषित को न्याय दिलाने में अधिवक्ता को न्याय व्यवस्था का मेरुरण्ड कहा जाये तो कोई अतिशयोक्ति नहीं है। यों कहा जा सकता है कि सम्पूर्ण न्याय तभी सम्भव है, जब अधिवक्ता की मौजूदगी है। देश की जंग-ए-आजादी में आगे बढ़ कर कुर्बानी देने का गौरवशाली इतिहास

अधिवक्ता समुदाय का रहा है। वही अनेक स्वतंत्रता सेनानियों को फांसी के फंदों से बचाने में निस्वार्थ रूप से अहम भूमिका भी अधिवक्ताओं ने बखूबी निभाई है और भारतीय संविधान को बनाने में अधिवक्ताओं का अतुलनीय विशेष योगदान रहा है। हमारे देश की लोकतान्त्रिक व्यवस्था की मजबूती व खूबसूरती को उच्चतम मुकाम पर रखने में अधिवक्ता समुदाय का अकल्पनीय कार्य व्यवहार आज भी अंतिम पंक्ति में खड़े भारतीय के दिलोदिमाग में संविधान व न्याय के प्रति अटूट विश्वास जगाता रहता है। संविधान की पवित्रता से सराबोर विधि एवं न्याय में विश्वास रखने वाले विद्वान अधिवक्ताओं व आमजन को अधिवक्ता दिवस की असीम शुभकामनाएं।

महान कानूनविज्ञ स्वतंत्रता सेनानी भारत रत्न डॉ. राजेंद्र प्रसाद को कोटि-कोटि नमना वन्दना।

मनोज कुमार, अध्यक्ष, उपभोक्ता आयोग, झुंझुनू

मारवाड़ का ही नहीं, राजस्थान का भी गौरव बढ़ाया था फिल्म अभिनेता ‘सज्जन’ ने



मिश्रीलाल पंचार

जोधपुर की धरा जहां वीरों की भूमि रही है वहीं राजस्थान की सांस्कृतिक राजधानी के रूप में भी पहचानी जाती है। यहां ऐसे अनेक कलाकारी भी हुए, जिन्होंने अपनी प्रतिभा का श्रेष्ठ प्रदर्शन कर मारवाड़ का ही नहीं, राजस्थान का गौरव बढ़ाया। ऐसे ही कलाकारों में ‘सज्जन’ एक उच्च कोटि के अभिनेता हुए हैं। सज्जन ने हिन्दी फिल्मों में अपनी प्रतिभा के बलबूते अलग ही पहचान बनाई। उन्होंने अधिकतम फिल्मों में चरित्र अभिनेता की भूमिका निभाई। कई बार अपने अभिनय से इतना प्रभाव छोड़ते कि फिल्म के दूसरे कलाकार उनके सामने बौने नजर आते। उन्होंने उस जमाने के सभी निर्माता निर्देशकों के साथ काम किया।

इनका पूरा नाम सज्जन लाल पुरोहित था। सज्जन का जन्म 15 जनवरी 1921 को जोधपुर में पुष्करणा ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इन्होंने जोधपुर के जसवंत कॉलेज से ग्रेजुएशन किया था। इनके घरवाले इन्हें वकील बनाना चाहते थे। इसलिए वकालत करने के लिए इन्हें लोककता

भेज दिया। कलकत्ता उन दिनों फिल्म निर्माण का भी बड़ा केंद्र था। अभिनय का इन्हें बचपन से शौक था। इसलिए वकालत की पढ़ाई करते ये कलकत्ता में फ़िल्मों की तरफ आकर्षित हो गए। सज्जन ने फ़िल्मों में काम करना शुरू कर दिया। पहले एक्स्ट्रा कलाकार के तौर पर काम किया। बाद में छोटे-छोटे डायलॉग्स वाले किरदार भी मिलने लगे। वे अभिनेता, नाटककार, कवि और बहुमुखी प्रतिभा के धनी कलाकार थे। जो एक बार उनसे मिलता, उनकी कलाकारी का कायल हो जाता।

कुछ समय बाद वे कलकत्ता छोड़कर बंबई आ गए। बंबई में इनकी प्रतिभा से प्रभावित होकर किदार शर्मा ने सज्जन को अपना असिस्टेंट बना लिया। उस वक्त राज कपूर भी किदार शर्मा के असिस्टेंट हुआ करते थे। सज्जन को लेखन का भी शौक था। बंबई में सज्जन ने कुछ फ़िल्मों के लिए संवाद लेखन का काम भी किया था। कुछ समय किदार शर्मा के साथ काम करने वाले के बाद सज्जन गजानन जागीरदार के असिस्टेंट बने। कहते हैं उन्हें 35 रुपए महीना की तनखाह मिलती थी। वो नौकरी इन्होंने काफी वक्त तक की थी। सज्जन ने 150 से अधिक फिल्मों और टीवी शो में काम किया। उन्होंने अपने करियर की शुरुआत 1941 में मासूम फिल्म से एक अतिरिक्त कलाकार के रूप में की थी और 1948 में धन्यवाद से मुख्य अभिनेता के रूप में अभिनय किया था। रामानंद सागर की फिल्म आंखें में उनके साथ काम किया था। इस फिल्म के बाद से ही सज्जन की अदाकारी रामानंद सागर के जेहन में बस गई थी। जब रामानंद सागर के मन

में की वीं सीरियल विक्रम और बेताल बनाने का ख्याल आया, तब उन्होंने बेताल के किरदार के लिए सज्जन को चुना। सज्जन ने भी ढेर न करते हुए सीरीस हां कह दिया।

सीरियल में विक्रम की भूमिका अरुण गोविल ने निभाई थी, जो आगे चलकर टीवी के श्रीराम बने। वहीं, सज्जन ने बेताल बन दर्शकों के बीच अलग ही छाप छोड़ी। यह भारत का पहला ऐसा शो था, जिसमें टीवी पर स्पेशल इफ़ेक्ट्स दिखाए गए थे। डरावनी शक्ल और बड़ी आंखें और लंबे सफेद बालों वाले बेताल का लुक उस जमाने में लोगों के बीच रोमांच पैदा कर रहा था। बेताल द्वारा बोला गया डायलॉग तू बेताल, तो मैं चला जा रहा हूं। मैं तो चला। आज भी लोगों के जेहन में बसा हुआ है।

1985 में प्रसारित होने वाला टीवी शो विक्रम और बेताल पूरे देश का ध्यान खींचने में सफल रहा था। टीवी शो विक्रम और बेताल के साथ एक अन्य शो लेना-देना में काम किया। सज्जन ने अपने करियर की शुरुआत मासूम (1941), चोरीगी (1942) जैसी फिल्मों में बतौर एक्स्ट्रा कलाकार की थी। उन्होंने मीना (1944) के संवाद और दूर चले (1946) और धन्यवाद (1948) के गीत भी लिखे।

1950-60 के दशक में इस बहुमुखी अभिनेता ने सैर्यां, रेल का डिब्बा, बहना, शोशा, मालकिन, निर्मोही, कस्तूरी, मेहमान, लगन, गर्ल स्कूल, परिधान, दो दूल्हे, घर-घर में दिवाली, हा-हा-ही-ही-हू-हू, पूनम झांझर, हल्ला- गुल्ला जैसी कई फिल्मों में अभिनय किया। 1967 में प्रदर्शित हुई हिंदी फिल्म फ़र्ज़ ने उस जमाने में सुपर हूपर रही थी। फ़र्ज़ फिल्म में अभिनेता सज्जन ने विलेन का किरदार निभाया था। फिल्म की नायिका बबीता थी। सज्जन ने उनके पिता दामोदर बने। फिल्म को कहानी के अनुसार, दामोदर को एक राष्ट्रोद्दही एक खलनायक के रूप में दिखायागया था। दामोदर भारत को नष्ट करने की साजिश रचने वाले विदेशी एजेंटों के साथ मिला होता है।



बहना, शोशा, मालकिन, निर्मोही, कस्तूरी, मेहमान, लगन, गर्ल स्कूल, परिधान, दो दूल्हे, घर-घर में दिवाली, हा-हा-ही-ही-हू-हू, पूनम झांझर, हल्ला- गुल्ला जैसी कई फिल्मों में अभिनय किया। 1967 में प्रदर्शित हुई हिंदी फिल्म फ़र्ज़ ने उस जमाने में सुपर हूपर रही थी। फ़र्ज़ फिल्म में अभिनेता सज्जन ने विलेन का किरदार निभाया था। फिल्म की नायिका बबीता थी। सज्जन ने उनके पिता दामोदर बने। फिल्म को कहानी के अनुसार, दामोदर को एक राष्ट्रोद्दही एक खलनायक के रूप में दिखायागया था। दामोदर भारत को नष्ट करने की साजिश रचने वाले विदेशी एजेंटों के साथ मिला होता है।

इस फिल्म में सज्जन ने अपने अभिनय से लोगों का दिल जीत लिया।

फ़िल्मों में तो ये कोई 50 साल तक सक्रिय थे। मगर टीवी पर इन्होंने एक बार ही काम किया था। और उस एक बार में ही इन्हें लोकप्रिय के शीघ्र तक पहुंचा दिया। टीवी जगत में भी इनका नाम अमर हो गया। फ़िल्मी दुनिया में वे सिर्फ सज्जन के नाम से जाने जाते थे। सन 2000 में 17 मई के दिन करीब 79 साल की उम्र में सज्जन का निधन हो गया। उस दिन हर फिल्म दर्शक की आंख नम थी। पूरा जोधपुर शोक में डूबा रहा।

– मिश्रीलाल पंचार, (लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं)।

गौतस्कों से गौवंश को बचाने के लिए झारेडा गांव में गौशाला खोली

- एक करोड़ रुपये की बेशकीमती जमीन गौमाता के नाम कर गौसेवा में जुटा है पूरा परिवार

क्षेत्र के युवा देसुल्ला गांव के बीरू कुमार जो कि पेशे से पत्रकार हैं भी उन्होंने गौमाता की सेवा का बीड़ा उठाते हुए झारेडा में अपनी बेशकीमती जमीन गौमाता के नाम करते हुए यहां श्री श्याम गौशाला सेवा समिति खोल दी। बीरू कुमार की इस पहल का ग्रामीणों ने स्वागत किया और उसे हर प्रकार

की सहायता मुहैया कराने का फैसला लिया। यह गौशाला पिछले करीब दो साल से लगातार काम कर रही है यहां करीब दर्जन भर से ज्यादा गाय है, जिनके भरण-पोषण की जिम्मेदारी गौभक्तों द्वारा उठाई जा रही है। इधर लावारिस गौवंश का यहा घूमना बन्द हो जाने से गौ तस्करों से जुड़े कुछ लोगों का खर्चा पानी बंद हो गया तो उन्होंने इस गौशाला को बंद करवाने के लिए गौशाला को अवैध बताते हुए अनेकों जगह इसकी शिकायत कर डाली। इन सभी बातों की जब यहां के सरपंच मंगल सिंह सहित क्षेत्र के मौजिज लोगों को पता चली तो उन्होंने

जिला प्रशासन को लिख कर दे दिया कि यह गौशाला क्षेत्र में अच्छा काम कर रही है। यहां किसी प्रकार की लूट-खसोट नहीं है। इस गौशाला पर लोग अपनी मर्जी से चंदा या गायों का खाना देते हैं इस गौशाला का विरोध करने वाले खुद ही प्रष्ट और गौतस्कों से मिले हुए हैं। गौशाला के समर्थन में सरपंच मंगल सिंह सहित भाजपा नेता जगदीश अटल, रूप सिंह केरवा, राजेन्द्र चौधरी डूमेडा, नरेन्द्र चौधरी, श्याम बिहारी चौधरी, विक्रम चौधरी, अजय प्रजापत, रत्तीराम झारेडा, हरि सिंह चौधरी, महेश चौधरी जातपुर सहित दर्जनों ग्रामीण शामिल रहे।



पंडित अनिल शर्मा

मेध, मंगल-वृश्चिक, बुध-तुला, गुरु-कर्क, शुक्र-वृश्चिक, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में। सर्वार्थ सिद्धि योग सायं 6:00 से सूर्योदय तक है। रवियोग सायं 6:00 तक है। आज भरणी कृत्तिक दीपम (द. भारत में) आज कृषि शिक्षा दिवस है। श्रेष्ठ चौघडिया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:10 तक, शुभ 10:58 से 12:16 तक, चर 2:53 से 4:11 तक, लाभ 4:41 से सूर्यास्त तक। राहूकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 7:04, सूर्यास्त 5:29 तक

राशिफल

बुधवार 3 दिसम्बर, 2025

मार्गशीर्ष मास, शुक्ल पक्ष, त्रयोदशी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2082, भरणी नक्षत्र सायं 6:00 तक, परिध योग सायं 4:57 तक, तैत्तिल करण सायं 7:26 तक, चन्द्रमा आज रात्रि 11:14 से वृष राशि में संचार करेगा। ग्रह स्थिति: सूर्य-वृश्चिक, चन्द्रमा-

मेघ व्यावसायिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। नौकरपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त कार्य करना पड़ सकता है। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। आज मानसिक तनाव से राहत मिलेगी।

तुला परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं, उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

वृष मित्रों/रिश्तेदारों के कारण समय अनर्गल कार्यों में खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है।

वृश्चिक विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अनहोनी की आशंका से बचा हुआ मन का भय समाप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संचालित खेत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

धनु व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। अटकें हूए में लावारिस भटकने के लिए छोड़ देते हैं। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। आज अनावश्यक धन खर्च हो सकता है।

कर्क व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटकें हूए कार्य बनने लगेंगे। चलते कार्यों में प्रगति होगी। आवश्यक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे।

मकर घर-परिवार में धार्मिक-सामाजिक एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

सिंह नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होगा। अटकें हूए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। घर-परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

कुंभ परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होगा। मित्रों/रिश्तेदारों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

कन्या चन्द्रमा अश्रम भाव में शुभ नहीं है। आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है। धन प्राप्ति में विलम्ब हो सकता है। महत्वपूर्ण कार्य योजना बन सकती है। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

मीन व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। महत्वपूर्ण कार्य योजना बन सकती है। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।